पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ बिलासपुर (छ.ग.)

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.
छत्तीसगढ़, बिलासपुर - 495009

परियोजना प्रतिवेदन

अकादमिक सत्र 2020–2021

पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा हेतु

विषय– "जनजातीय क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन"

निर्देशक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
(सहायक प्राध्यापक)
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तुतकर्ता
नाम–लिली चक्रधारी
रोल नं.– 223912
नामांकन क्र. LF223912

Forwarded

हिन्दी-विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि.
छत्तीसगढ़, बिलासपुर - 495009

घोषणा पत्र

मैं **लिली चक्रधारी** नामांकरण क्रमांक LF223912 घोषणा करती हूँ कि **"जनजातीय क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन"** विषय पर प्रस्तुत यह परियोजना कार्य मेरे द्वारा संग्रहित तथ्यों पर आधारित है तथा यह मेरा मौलिक कार्य है। यह परियोजना कार्य मैंने डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति, सहायक प्राध्यापक पंडित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के मार्गदर्शन एवं मेरे स्वयं के प्रयास से मिथ्या वर्णन से पृथक रहकर पूर्ण किया गया है।

स्थान–बिलासपुर

दिनांक– 30.12.2021.

Lily

प्रस्तुतकर्ता

नाम–लिली चक्रधारी

रोल नं.– 223912

नामांकन क्र. LF223912

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि मैं **लिली चक्रधारी** जो कि पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के छात्र है जिन्होंने परियोजना विषय **"जनजातीय क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन"** प्रस्तुत किया है।

यह परियोजना मेरे पूर्ण मार्गदर्शन एवं छात्र के स्वयं के प्रयास से पूर्ण किया गया है।

स्थान–बिलासपुर

दिनांक– 30/12/2021

मार्गदर्शक

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति

सहायक प्राध्यापक

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
1.	सारांश	
2.	प्रस्तावना	
3.	जनजाति परिचय	
4.	अध्ययन का उद्देश्य	
5.	उपकल्पना	
6.	साहित्य का पुनरावलोकन	
7.	शोध प्रविधि	
8.	तथ्यों एवं आंकड़ो का संकलन	
9.	निष्कर्ष एवं सुझाव	
10.	संदर्भ ग्रंथ सूची	
11.	परिशिष्ट	

ष्जनजातीय क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन" विषय पर लघु शोध

अनुक्रमाणिका

क्रमांक	अध्याय	विषय – सुची	पृष्ठ संख्या
1.	सारांष		
2.	प्रस्तावना		
3.	जनजाति परिचय		
4.	अध्ययन का उद्देष्य		
5.	उपकल्पना		
6.	साहित्य का पुनरावलोकन		
7.	शोध प्रविधि		
8.	तथ्यों एवं आंकड़ो का संकलन		
9.	निष्कर्ष एवं सुझाव		
10.	संदर्भ ग्रंथ सूची		
11.	परिषिष्ट		

प्रस्तावना

संचार के आधुनिक माध्यमों में रेडियो ने अपने वर्चस्व और महत्व को बरकरार रखा है। रेडियो अपनी विकास यात्रा के स्वर्णिम चरणों को पूरा करता हुआ आज एक नए मुकाम को हासिल कर चुका है। रेडिया पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का श्रोताओं पर सबसे ज्यादा और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अषिक्षित लोगों के लिए तो रेडियो वरदान माना जाता है। एक अनपढ़ व्यक्ति भी इस माध्यम का इस्तेमाल आसानी से कर सकता है। रेडियो मूलतःएक श्रव्य माध्यम है। इसपर दृष्य देखने की सुविधा उपलब्ध नहीं है । रेडियो की यही बात इसे अन्य जनसंचार माध्यमों की तुलना में विषेष या सबसे हटकर साबित करती है। रेडियो पर समाचार या मनोरंजन परोसने का भी एक अलग तरीका है। प्रस्तुतीकरण की तुलना में रूचिकर माध्यम बनता है।

भारत जैसे विकासषील देष में आज भी जहां कुल आबादी का एक बड़ा हिस्सा गांवों में निवास करता है, वहां रेडियो ही ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का सबसे सुलभ, सस्ता और आसान साधन है । इस माध्यम को प्रसारण षिक्षा के एक कारगर संवाहक के रूप में देखा जा सकता है। रेडियो की शुरूआत 24 दिसम्बर 1906 की शाम कनाडाई वैज्ञानिक रेगिनाल्ड फेसेंडेन ने जब अपना वॉयलिन बजाया और अटलांटिक महासागर में तैर रहे तमाम जहाजों के ऑपरेटरों ने उस संगीत को अपने रेडियो सेट पर सुना, वह दुनिया में रेडियो प्रसारण की शुरूआत थी। इससे पहले जगदीष चन्द बसु ने भारत में तथा गुल्येल्मो माकौनी ने सन 1900 में इंग्लैड से अमेरीका बेतार संदेष भेजकर व्यक्तिगत रेडियो संदेष भेजने की शुरूआत कर दी थी पर एक साथ संदेष भेजने या ब्रॉडकास्टिंग की शुरूआत 1906 में फेसेंडेन के साथ हुई। ली द फोरेस्ट और चार्ल्स हेरॉल्ड जैसे लोगों ने इसके बाद रेडियो प्रसारण का प्रयोग करने शुरू किए। आज के परिष्कृत और तीव्र गातिवाले इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के कई आधारभूत प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी में आरंभ हुए और इसी दौरान भौतिकषास्त्री जेम्स क्लार्क मैक्सवेल ने चुंबकीय क्षेत्र का निर्माण करती हैं। कैंब्रिज के भौतिक शास्त्री जेम्स क्लार्क मैक्सवेल ने चुंबकीय विद्युत तरंगों का गणितीय सिध्दांत प्रस्तुत किया, उन्होनें यहा प्रमाणित किया कि विद्युत तरंगे अपने स्त्रोत से बाहर की ओर प्रकाष की गति से प्रभावित होती है, धातु की परत व्दारा उसी प्रकार परावर्तित किया जा सकता है, जिस प्रकार प्रकाष की तरंगें आईने से परावर्तित होती है। विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि चुबंकीय विद्युत् तरंगें आयनोस्फीयर से टकराकर परावर्तित होती है और इस प्रक्रिया से ये पृथ्वी के किसी भी भाग में पहुंच सकती है, यह जानकारी रेडियो प्रसारण की दिषा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम था।

हिन्दी प्रसारण सेवा शुरू होने के साथ ऑल इंडिया रेडियो को आकाषवाणी का भी नाम दिया गया, छत्तीसग़ढ़ में प्रथम आकाषवाणी केन्द्र रायपुर में स्थापित हुआ जो अभिाजित मध्य प्रदेष, इंदौर, भोपाल के

पष्चात तीसरा केन्द्र था, वर्तमान में इसकी झमता 100 कि. वाट की है और यहॉ से मीडियम वेव पर भी कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं, इस केन्द्र का प्रसारण क्षेत्र लगभग 150 वर्ग किमी है जिसमें रायपुर, महासमुंद, धमतरी, कांकेर, दुर्ग, बिलासपुर, जॉजगीर–चापा, राजनंदगांव, कवर्धा, एवं कोरबा जिले सम्मिलित हैं, इसे लगभग 1.5 करोड़ लोग सुनते है, इस केन्द्र से हिन्दी, उर्दू, उड़िया, बंगला, मराठी, व तेलगू भाषा में कार्यकम प्रसारित किये जाते है। 20 कि. वाट है और इसका प्रसारण क्षेत्र 50 किमी की परिधि में हैं, इसके कार्यक्रम हिन्दी और उड़िया भाषा में प्रसारित होते है, जिन्हें कोरिया, सरगुजा, रायगढ़ व जषपुर जिले के लोग सुनते हैं. प्रदेष में तीसरी आकाषावाणी केन्द्र प्रदेष के सर्वाधिक पिछड़े व निरक्षर आदिवासी क्षेत्र बस्तर संभाग के मुख्यालय जगदलपुर में 22 जनवरी, 1977 को आरम्भ हुआ. इसकी क्षमता 20 कि. वाट है इस केन्द्र से जगदलपुर एवं दंतेवाड़ा जिले के लोग लाभान्वि होते है। वर्ष 1991–92 में प्रदेष के रायपुर, रायगढ़ और बिलासपुर में एफ.एम ट्रान्समीटर लगाकर समस्त छत्तीसगढ़ को रेड़ियो प्रसारण के दायरे में लाया गया. इस प्रकार वर्तमान समय में प्रदेष में पॉच आकाषवाणी केन्द्र हैं, जिसमें तीन एम डब्लू व तीन एम एफ बैंड़ के हैं. वर्ष 2002 में राजधानी में एफ एम चैनल आरंभ किया गया. सन् 1956 ई. में यूनेस्को ने भारत को अपने रेडियो रूरल प्रोजेक्ट के लिए चुना। इस तरह का प्रोजेक्ट पहले कनाडा में सफल रूप में लागू किया जा चुका था। इस ऐतिहासिक प्रोजेक्ट के लिए महाराष्ट्र स्थित पूना के आस – पास के 144 गावों का चयन किया गया। इन गावों में रेडियो रूरल फोरम बनाए गए और आकाषवाणी द्वारा कार्यक्रमों के प्रसारण के बाद वहां के ग्रामीणों के साथ वार्तालाप किया गया।

इस परियोजना के लिए एक नारा भी दिया गया था 'सुनो चर्चा करो उसके बाद लागू करो। इस अध्ययन के माध्यम से यह बात निकलकर सामने आई कि पूना के ग्रामीणों में रेडियो फोरम ने विभिन्न मुदों पर आम राय बनाने में योगदान किया ग्राम पंचायतों को मजबूती प्रदान की, प्रसारण षिक्षा के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कई कार्यक्रमों को रेडियो के जारिए श्रोताओं तक पहुंचाने का क्रम वर्तमान में भी जारी है। लोगों के लिए भी कार्यक्रम बनाना, निर्णय लेने की क्षमता का विकास स्थायी परिवर्तन, स्थानीय नेतृत्व का विकास, ग्रामीण समूह तथा संस्थाओं का विकास, आदि प्रसारण षिक्षा से संबधित कुछ प्रमुख मुदे है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों के लिए प्रस्तुत इस कार्यक्रम में खेती–बाड़ी एंव ग्रामीण समस्याओं की चर्चा की जाती है। इस कार्यक्रम के प्रसारण सभी अंचलों में स्थानीय विषेषताओं के साथ अलग ढ़ग से किया जाता है। इसके लिए साक्षात्कार, फीचर,वार्ता, आदि के जरिए ग्रामीण को नई तकनीकियों के बारे में बताए जाने के साथ – साथ गीत–संगीत भी सुनाया जाता है, जिससे श्रोताओं का मन लगा रहे उन तक विभिन्न विषयों से संबधित जानकारियों का भी संचार हो सके।

रेडियो प्रसारण में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विषेष रूप से होने वाले कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण स्थान है। भारत एक विषाल देष है। यहॉ गॉवों की संख्या लगभग पॉच लाख है। जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा गॉवों में बसता है। असंख्या गॉव ऐसे दूर–दराज क्षेत्रों तें बसे हैं जिनका बाहर से सीमित संबंध है। कई गॉव सड़कों से नहीं जुड़े हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में षिक्षा का प्रसार सीमित है। ऐसे क्षेत्रों के लिए ये प्रसारण सूचना जानकारी एवं मनोरंजन का महत्तवपूर्ण एवं सुलभ माध्यम है। रेडियो प्रसारण ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में चुने जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की अपनी अलग तरह की सूचना एवं जानकारी संबंधी आवष्यकताएॅ हैं । इन कार्यक्रमों की प्रसारण योजना एवं प्रस्तुति में इन बातों का ध्यान रखना आवष्यक है।

जनजाति परिचय

देष की कुल जनसंख्या का 8.2 प्रतिषत हिस्सा आदिवासियों का है। भारत के विभिन्न भागों में घने जगलों पहाड़ों, नदियों के किनारे रह रहे है। स्वतंत्रता के बाद सन् 1950 में जनजातिय समुदाय की पहचान कर 212 जनजाति समुदायों की सूची तैयार करने के बाद अनुसूचित जनजातिय आदेष 1950 में लागू किया गया। इस सूची में सभी जनजातिय समुदाय अनेक कारणवष शामिल नहीं किये जा सके। फलस्वरूप अनुसूचित जनजाति का विरोध हुआ। इस विरोध को ध्यान में रखते हुए पिछड़ी जाति आयोग का गठन किया गया। पिछड़ी जाति आयोग के अनुमोदन से पूर्व में बनाई गई सूची संषोधित की गई। इसके बाद राज्य पुर्नगठन कानून लागू किया गया। जिसके तहत राज्य की सूचियों में परिवर्तन किया गया है। इन सूचीबध्द जनजाति कहा गया है। इसके बाद 'राज्य पुनगणन कानून लागू किया गया। जिसके तहत राज्य के सूचियों में परिवर्तन किया गया। इन सूचीबध्द जनजातियों को ही अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। खासकर आदिवासी पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्रों में अधिक निवास करते हैं। देष के वन प्रदेषों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले अनेक मानव – समुदायों को अनुसूचित जनजाति कहा जाता है। इन दुर्गम और पृथक क्षेत्रों में निवास करने वाले मानव समुदायों के लागों को आदिवासी, जनजाति, आदिम जाति, वन्य जाति, वनवासी इत्यादि नामों से सम्बोधित किया ।

भारतीय संविधान के दषम भाग में अनुसूचित एंव जनजाति क्षेत्र का वणन किया गया है। जिसके अनुसार यह भूखण्ड या भौगोलिक क्षेत्र जहां आदिवासी या जनजाति आदिकाल से निवास कर रहे हैं या निवास करने का दावा करते है। आदिवासी क्षेत्र जाता है। अनुसूचित क्षेत्र वह क्षेत्र होता है जहां पर आदिवासीयों का समूह आदिकाल से जीवन–यापन करते हुए निवास कर रहे हो और देष के राष्ट्रपति जी को अधिकार है कि वह संसद द्वारा पारित कानून के अधीन रह कर राज्य के किसी भी क्षेत्र को 'अनुसूचित क्षेत्र' घोषित कर सकते हैं। छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या के अनुसार 2,55,40,195 है। यह आदिवासी बाहुल्य प्रदेष है। यहां पर आदिवासीयों की आबादी सबसे अधिक है। के अनुसार छत्तीसगढ़ में 2011 के

जनगणना के अनुसार अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 78,22,902 है। प्रदेष में अनुसूचित जनजातियों की आबादी 32 प्रतिषत है। राज्य के कुल जनसंख्या का लगभग एक तिहाई जनसंख्या अनुसूचित जनजातियों का है। यदि 2011 के जनगणना के आंकड़ों का अवलोकन करें तो यह स्पश्ट होता है कि अनुसूचित जनजातियों का सर्वाधिक आबादी बीजापुर 80 प्रतिषत और नारायणपुर 77.36 प्रतिषत जिले में है। इसके अलाव दन्तेवाड़ा, बस्तर, कोन्डागांव, सुकमा, जषपुर, सरगुजा, कोरिया, सूरजपुर, बलरामपुर, कोरबा, रायगढ, महासमुन्द, राजनादगांव, धमतरी, कवर्धा, बिलासपुर, दूर्ग, बालोद, जांजगीरचांपा, में भी अनुसूचित जनजातियों की बाहुल्य जनसंख्या है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

आदिवासी पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्रों में अधिक निवास करते है। देष के वन प्रदेषों राज्य छत्तीसगढ़ जो देष का 26वां राज्य है। इसकी स्थापना 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेष से अलग कर किया गया। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देष का 10वां बड़ा प्रदेष है। इसका क्षेत्रफल 135,194 किलो मीटर में फेला हुआ है। वर्ष 2015 के अनुसार छत्तीसगढ़ की कुल जनसंख्या 27.93 मिलियन है। मनमोहक छत्तीसगढ़ राज्य प्राकृतिक सुंदरता से सराबोर है और यहां शहरी और ग्रामीण जीवन का मिश्रण है। यह मध्य भारत की सांस्कृतिक भव्यता का केन्द्र है और ये यहां के लोगों, संस्कृति और त्यौहारों में झलकता है।

यह राज्य मध्य प्रदेष के उन जिलों को जोड़ कर बना है जहां छत्तीसगढ़ भाषा बोली जाती है। यहां ज्यादातर लोग आदिवासी हैं,जो हिंदी और छत्तीसगढ़ी बोलते हैं। यह पर आदिवासी की आबादी है। सबसे ज्यादा गावों में निवास करते है, ग्रामीण क्षेत्र बस्तर संभाग छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर कांकेर के विकासखण्ड दुर्गूकोंदल को अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन के लिए चयन किया गया है। जो कि जिला मुख्यालय कांकेर से लगभग 77 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां विकासखण्ड अनुसूचित क्षेत्र के अंर्तगत आता है। जनगणना के अनुसार विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 63,358 है और इस ब्लॉक में 141 गांव, 50 पंचायत है। यह मुख्य रूप से आदिवासों गोंड, मुरिया, माडिया, हल्बा, उराव, जनजाति पाई जाती है, तथा इनकी भाषा और बोलियां मुख्य रूप से गोंड़ी, हल्बी, छत्तीसगढ़ी है। यह एक घना जंगली इलाका होने के वजह से सरकरी तंत्रों से पंहुच विहीन है। इस ब्लाक में संचार के साधन जैसे रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, और इंटरनेट काफी सीमित क्षेत्र में उपलब्ध है। इस ब्लाक में जाने के लिए यह केवल सड़क मार्ग से ही पहुंचा जाता है। और कई ऐसे गांव है जहां आने जाने के लिए साधन नही है। कहीं कहीं सड़क तथा पुल की व्यवस्था नही हें, पैदल ही इस गांव से दुसरे गांव जाना पड़ता है। इसके साथ ही यह एक संवेदनषील इलाका भी है। जिसके चारों ओर घने जगल, नदी,पहाड़,से घीरा हुआ है। जो इसके पिछड़े होने के अन्य कारणों में से एक है।

क्षेत्र की प्रमुख जनजातियॉ

1 गोंड़ – दुर्गूकोंदल ब्लॉक में गोंड़ जनजाति सबसे अधिक पाई जाती है। छत्तीसगढ में जनजातियों में गोंड़ सबसे बड़ी जनजाति है, जो राज्य के दक्षिण हिस्सो में निवास करती है। गोंड़ अधिकांष बस्तर के पठार तथा छत्तीसगढ़ बेसिन तक विस्तृत है। प्राचीन काल में राज्य गोंड़वाना लैण्ड के क्षेत्र में भी फैला था । इसी कारण गोंड़वाना लैण्ड क्षेत्र के निवास गोंड़ कहलाती रहे। छत्तीसगढ़ में गोंड़ की कुल 30 षाखांए है जिसमें प्रमुख रूप से अबुझमाड़िया, दंडामी, छरिया,और सर्वधिक प्रचलित गौत्र नेताम, मरकाम, टेकाम, सलाम आदि हैं।

2 हल्बा – यह जनजाति रायपुर, दुर्ग बस्तर राजनांदगांव जिले में पाई जाती है। बस्तर में हल्बा, भानुप्रतापपुर,कांकेर, की ओर बसे है। इस जनजाति का उपविभाजन है– बस्तरिया, छत्तीसगढ़ियां तथा मरेठिया, हल्बा जनजाति की कई उपषाखांए है। जैसे – नायक, भंडारा, परेत, सुरेत, तथा नरेवा, हल्बा अधिक प्रगातिषील है। अपने को महादेव – पार्वती द्वारा उत्पन्न मानते है,तथा इनकी बोली हल्बी है।

3 माड़िया – यह जनजाति प्रमुख रूप से बस्तर में निवास करती है। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने माड़िया दुनिया की सभ्यता से पुर्णतः अलग है। इनमें अनेक अबूझमाड की पहाड़ियों में रहते है। अतः इन्हें अबूझमाड़िया भी कहते है। माड़ियों का एक वर्ग गौर माड़िया कहलाता है क्योंकि ये लोग जंगली भैंस के सींग की बनी टोपी पहनते है। दण्डामी माड़िया का वर्ग प्रसिध्द है।

4 मुड़िया – मुड़िया गोंड़ों की उपजाति है। यह मुड षब्द से विकसित हुआ है जिसका अर्थ है पलाष का वृक्ष। षाब्दिक दृश्टि से मुरिया का अर्थ है। आादिम मुड़िया जनजाति अपनी विषिश्ट पहचान कोंडागांव एवं नारायणपुर में बनाये हुए है जहां इनकी संख्या अधिक है। ये गोंड़ी तथा हल्बी बोलियां बोलते हैं

5 भतरा – यह एक आदिम जनजाति है, जो बस्तर संभाग एवं रायपुर जिले के दक्षिण भागों में मुख्य रूप से निवास करती है।

6 भारिया – यह छत्तीसगढ़ की विषेष पिछड़ी जनजाति है। छत्तीसगढ़, बिलासपुर, कोरबा, और जांजगीर जिले में इनका निवास स्थान पाया जाता है। भारिया प्रमुख उपजातियां– भूमिया, भुईहार व पंडो होती है। इनकी बोली भरनाटी, भारियाटी है। भारिया द्रविड़ियन प्रजाति की आदिम जनजाति है।

जनजाति क्षेत्र के लोक गीत

सुआ नृत्य :– दुर्गूकोंदल में जन – जीवन में सुआ नृत्य की सबसे अधिक लोकप्रियता हैं, इसमें सभी जाति वर्ग की स्त्रयॉ हिस्सा लेती है धान पकने के बाद दीपावली के कुछ दिन पूर्व से सुआ नृत्य आरम्भ होता है। और समापन दीपावली की रात्रि में षिव – गौरी का विवाह के आयोजन से होता है। इसलिए सुआ नृत्य को गौरी नत्य भी कहते है। महिलाएं अपने गॉवों से टोली बनाकर समीप के गावा में भ्रमण करती है। और प्रत्येक घर के सामने गोलाकार झुण्ड बनाकर ताली के थापक पर नृत्य करते हुए गीत गाती है। घेरे के बीच में एक युवती सिर पर लाल कपड़ा ढकै टोकरी लिए होती है। टोकरी में धान भरकर मिट्टी से बने दो सुआ तोते षिव पार्वती के प्रतीक के रूप में सजाकर रखे जाते है।

रेला नृत्य :– दुर्गूकोंदल में आदिवासी जनजातियॉ रेला नृत्य की लोकप्रियता सबसे अधिक है, गोड़ आदिवासी महिला, पुरूष, बच्चे, युवक, युवती आदि लोग विभिन्न अवसर जैसे शादी, ब्याह, त्यौहारों में नवाखाई, पोरा, हरेली में आदिवासी जनजाति समूह बनाकर एक गोल घेरे में सभी लोग रोल में ठोल लटाककर तथा महिलाये हाथों चुटकी लेकर रेला, गीत और नृत्य करती है।

हुलकी नृत्यः– हुलकी नृत्य मुरिया आदिवासीयों में प्रचलित है. इनमें नृत्य के साथ ही इसके गीत विषेष आकर्षण रखते हैं, इस नृत्य में लड़के एवं लड़कियॉ दोनों ही भाग लेते है। इसमें यह गाया जाता है कि राजा रानी कैसे रहते है? अन्य गीतों में लड़के – लड़कियों की शारीरिक संरचना पर प्रति सवाल – जवाब

होते है। जैसे ऊँचा लड़का किस काम का ? जवाब– सेमी तोड़ने के काम का आदि. यह नृत्य किसी समय सीमा में बँधा हुआ नहीं है, और कभी भी नाचा गाया जा सकता है।

मांदरी नृत्य :– मांदरी नृत्य घोटुल का प्रमुख नृत्य है इसमें मांदरी करताल पर नृत्य किया जाता है तथा गीत नहीं गाया जाता है इासमें पुरूष नर्तक हिस्सा लेते है। दूसरे तरह के मांदरी नृत्य में चिटकुल के साथ युवतियॉ भी हिस्सा लेती है। इसमें कोई एक व्यक्ति पूरे नृत्य का नेतृत्व करता है, जो नृत्य में शामिल होते है। यह व्यक्ति मांदरी की थापों का आयोजन अलग – अलग करता है, जिसमें कम से कम एक चक्कर में मांदरी नृत्य अवष्य किया जाता है। तांदरी नृत्य में षामिल हर व्यक्ति कम से कम एक थाप के संयोजन को प्रस्तुत करता है। जिस पर पुरे समूह नृत्य करता है।

गेंड़ी नृत्यः– मुड़िया आदिवासी जाति में घोटुल में युवाओं के लिए सामाजिक व्यवहार, परम्परा और कला है घोटुल के मुड़िया युवक लड़की की गेंड़ी पर एक अत्यंत तीव्रगति का नृत्य करते हैं, जिसे डिटोंग कहा जाता है। इस नृत्य में केवल पुरूष ही शामिल होते है, इसमें अत्यंत कुषलता के साथ गेंड़ी पर शारीरिक संतुलन को बरकरार रखते हुए नृत्य की योजना करना पड़ता है।

ब्लॉक की समान्य जानकारी

क्षेत्रफल	135,194 किलो मीटर
ब्लाक की जनसंख्या	63,358
महिला	
पुरूष	
ग्राम पंचायतों की संख्या	50
आबादी गांव की संख्या	36
वन ग्रामों की संख्या	15
अनुसूचित जाति	
अनुसूचित जनजाति	
अन्य	
ब्लाक की प्रमुख जनतातियां	गोंड़, हल्बा, माड़िया, मुड़िया, उराव,

ब्लाक में प्रचलित भाषा/बोलियां	गोंड़ी, हल्बी, छत्तीसगढ़
प्रमुख फसलें	धान, मक्का, मुंग, उड़द, कुटकी, मड़िया,
नदियां	घण्ड़ी नदी, कोतरी नदी,
मंदिर	घण्ड़ी घाट, सोना देही, हाहालदी,
पर्वत	हाहालदी पहाड़, सोना देही पहाड़,
संगीत	सुआ, ददरीया, करमा, रेला, मांदरा, हुलकी, गेड़ी,
नाटय	नाचा, गम्मत, रामलीला,
त्योहार	चुकी, पोरा, नवा खाई, हरेली

जनजातियों में खान–पानः–

खान–पान के द्वारा शरीर की पृष्टि के साथ मन की और बुध्दि का भी संवर्धन होता है। स्वास्थय और शक्ति खान – पान पर ही निर्भर करता है। खान –पान क्षेत्र विषेष के आधार पर, भोगोलिक परिस्थितियों के आधार पर निर्धारित होता है। व्यक्ति उन्ही खादय पदार्थो का उपयोग करता है, जो उनके क्षेत्र विषेष में मिलता है व जलवायु और भूमि के अनुसार उत्पन्न कर सकता है। बस्तर के जनजाति कंद–मूल, फल, पौधे, चांवल का प्रयोग करते हैं। सुदूर क्षेत्र में झूम खेती के माध्यम से उत्पादन करते थे । अब स्थायी खेती और पषु पालन द्वारा जीवन यापन किया जाता है। गोंड़, हल्बा, मुरिया जनजाति के लोगों के भोजन में चांवल,दाल, सब्जी का समावेष हो गया है। रोटी भी खाये जाते हैं।

चॉवलः–

चांवल के साथ दाल, साग–भाजी का उपयोग करते हैं। कोदो, कुटकी, धान, बाजरा, मूंग, मसूर, जो, मड़ीया का प्रयोग किया जाता है। मांड पेज, चांवल, कोदो, कुटकी, मड़िया, मक्का, कुल्थी इत्यादि अन्न के दोनों को आटा बनाकर रातभर भीगों देते है, इसके बाद हंडी में पानी भर खूब देर आग में पकाते हैं, बस्तर में मुड़िया, मारिया इसे पेज कहते हैं।

मद्यपानः–

मद्यपान प्राचीन काल से भारत में प्रचलित है। वैदिक काल में जिस द्रव्य को सोमरस कहते थे वह द्रव्य मद्य का ही रूप था। जनजातियों में जन्म से लेकर मृत्यु तक जितने भी काम किये जाते हैं, उनमें मद्य का होना

आवष्यक माना जाता हैं। महुये के पुश्प से स्वयं मद्य तैयार किया जाता है। धार्मिक अनुश्ठान, प्रत्येक कार्यक्रम, संस्कार में मद्य अर्पित करने की प्रथा इनमें पायी जाती है। सामाजिक कार्यो का अभिन्न अंग है। वर्तमान में कुछ हल्बा, गोंड़ जनजाति कबीर पंथ को स्वीकार कर लिये है वे अपने को मद्यपान से दूर रखते हैं।

कंद मूलः–

जनजातियां जंगलों में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के कंद मूल, का उपयोग करते है। अंचल के जनजातियां नागर कांदा यह कांदा जंघा की भाति मोटा व तीन फुट तक लम्बा होता है जो खाने में स्वादिष्ट होता है। गिरची कांदा, सेमर कांदा, पाताल कुम्हाड़ा कांदा, केषरूआ कांदा, अंगीठा कांदा, इसके अलावा बलियारी कांदा, करू कांदा, बिटटे कांदा, बन सिघाड़ा तिखर आदि पौधों की जड़ एंव कंद भोजन के रूप में प्रयोग किया जाता है।

वेषभूषाः–

वेषभूषा में व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक, सोस्कृतिक,एंव धार्मिक स्थिति का बोध होता है। धनी लोगों के वस्त्र जन सामान्य से भिन्न होता है। गोंड़ पुरूष घुटने तक धोती, एंव कुर्ता धारण करते थे तथा सिर पगड़ी बांधते थे इनके वस्त्र सूती होते है। गोंड़, पुरूष महिलायें 6 से 8 गजी साड़ी घूटने तक पहनती है महिलाओं की साड़ी प्रायः लाल, जामुनी, गहरे रंग तथा सफेद रंग की होती है। गले में मूंगे, मोतियां, चांदी व सोने के गहने धारण करती है। गोंड़, बैगा और हल्बा जनजातियां बालों पर प्रकृति पदत्त पुष्प, लड़की, मयूर, एंव भृंगराज पक्षी के पंख को नृत्य के अवसर पर अलंकृत करते थे। बस्तर के माड़ियां गोंड़ो में प्रचलित घोटुल की तरूणियां अपने केष को कौड़ियों तथा सफेद, नीले रंग की छोटी–छोटी मोतियों की मालयें कलात्मक रूप से गुंथकर मस्तक में पट्टी में सादृष्य बनाकर धारण करती है। कानों में बाली, करणफूल, खूंटी जनजाति महिलायें पहनती है गले में सूता पहनती है। हाथों में बाजूबंद पहनती है। नाक में फूली और बुलाक, गले में चांदी, गिलट या जर्मन के सूते, रूप्या माला जिसे पुतरी माला भी कहते है, बाहों और कलाइयों में बांहाचेघा रवाड और चुड़ियां, अगुलियों में अगुठियां, पावों में तोडे या पैरिया पहनती है।

व्यवासायः–

जनजातियों के व्यवसाय के स्वभाव से ही जनजाति बहुत परिश्रमी और सच्चे होते है। जंगली भूमि को साफ करना, खेती करना, पेड़ काटना,तथा लाख एकत्रित करना, महुआ बीनना, तेन्दु पत्ता तोड़ना, चार बीनना, टोरी बीनना, सूवर एंव गाय पालन करना आदि प्रमुख व्यवसाय है।

आवागमन के साधनः– दुर्गूकोंदल ब्लॉक काफी सवेदनषील और जंगली इलाक तथा इस ब्लॉक के चारो ओर घने जगल, नदी नाले, और पहाड़ी क्षेत्र होने की वजह से, आवागमन के साधन केवल सीमित क्षेत्रों में ही उपलब्ध है। इस ब्लॉक मुख्या रूप से बस, टैक्सी, और कहीं – कहीं पर तो केवल अपने साधन जैसे मोटर गाड़ी, साईकिल, या पैदल ही आना जाना पड़ता है।

संचार के साधन :– दुर्गूकोंदल ब्लॉक में संचार के साधन रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, मोबाईल फोन, इन्टरनेट इस क्षेत्र में बहुत कम ही जगहों पर उपलब्ध हैं, केवल व ही स्थानों में है। जहां प्रर्याप्त रूप से बीजली, सड़क, तथा यतायात की सुविधाये उपलब्ध है। और इसके अलवा जो मुख्य सड़क से लगे जो गांव है, वह संचार के साधनो की पंहुच है।

जलवायुः–

यह क्षेत्र मौसमी जलवायु वाला क्षेत्र है। इस ब्लॉक में मुख्य रूप से तीन प्रकार की ऋतुएँ हैं ग्रीष्म, वर्षा, शीत इस क्षेत्र में वर्षा और शीत ऋतु में कृषि कार्य के साथ – साथ वनोपज एकत्र करने का कार्य दुर्गूकोंदल के आदिवासी करते आ रहें है।

प्राकृतिक वातावरण में जलवायु का सर्वाधिक प्रभाव यहां के रहवासियों के आर्थिक क्रियाकलापों पर पढ़ता है। यह क्षेत्र घने जंगलों पहाड़ियों नदी, से घीरा हुआ होने के कराण ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी नही लगती है। जबकि शीत ऋतु में पहाड़ियों एवं वनाच्छादित क्षेत्र में यह ठण्ड सबसे अधिक लगती है। यह वर्षा जून से अगस्त माह के बीच होती है।

मिट्टयॉ :–मिट्टी प्रकृतिक सम्पदा है जिसके कारण यहॉ कई प्रकार की मिट्टी पाई जाती है।

अध्ययन का उद्देष्य

प्रस्तुत शोध विषय में अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में रेडियो से संबधित जनजातियों को रेडियो संचार का एक सषक्त माध्यम है जिसके द्वारा जनजाति समाज की गहन संरचना को समझा जा सकता है। अध्ययन का उदेष्य को अद्योलिखत रूप से समाष्टि किया गया है:–

1 रेडियो श्रोताओं का अध्ययन
2 कार्यक्रमों के अनुसार अभिरूचि का अध्ययन
3 नवीन जानकारीयों के आधार पर अध्ययन
4 संस्कृतिक शैक्षाणिक कृषि कार्यक्रमों के आधार पर अध्ययन
5 रेडियो में भाषाओं के समझ पर अध्ययन
6 ग्रामीण क्षेत्र में रेडियो संचार प्राप्त करने का एक सषक्त माध्यम है इसका अध्ययन

शोध प्राकल्पनाएं

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकल्पना का निर्माण किया गया है।

1 जनजाति क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की आधुनिक सुविधाओं की कमी ।
2 जनजाति क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की संख्या।
3 जनजाति क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की आर्थिक स्थिति ।
4 जनजाति क्षेत्र में ब्लाक की जनसंख्या।

साहित्य का पुनरावलोकन

(कौषल शर्मा 2004)

ग्रामीण कार्यक्रम के अंतर्गत अन्य विषयों पर भी इस तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है प्रत्येक किन्द प्रातः एक ऐसा कार्यक्रम प्रसारित करता है, जिसमें सामाजिक कृषि कार्यो की तात्काालिक जानकारी रहती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यहां प्रसारण कृषि तथा ग्रामीण जीवन से जुड़ी अन्य जानकारी के एकमात्र सुलभ साधन है।

(डॉ.हरिमोहन 110032)

रेडियो संचार का एक सषक्त जन–माध्यम है। इसकी अपरिहार्यता का और व्यापकता से हर कोई परिचित है। यह माध्यम लोगों को आपसी अनुभवों के जरिये परसर जोड़ता है और ऐसे विषय प्रदान करता है, जिन पर संवाद हो सके। एक जागरूक श्रोता का दिन रेडियो से शुरू होता है और रात भी रेडियो की आवाज के साथ बंद होती है।

(डॉ.त्रिभुवन राय 2004)

जन साधारण को ज्ञान प्रदान करने और षिक्षित करने के साथ – साथ मनोरंजन के अवसर उपलब्ध करने के लिए आकाषवाणी का उपयोग होता है कार्यक्रमों में विभिन्न स्टेषनों से प्रसारित क्षेत्रीय भाषाओं के कार्यक्रम, संगीत, वार्ता, नाटक आदि के राष्ट्रीय कार्यक्रम समाचार बुलेटिन, सारे देष में सुने जाने वाले विविध भारती के विज्ञापनों से भरपूर कार्यक्रम तथा विषेष प्रकार के श्रोताओं के लिए जैसे ग्रामीणों, युवकों विद्याथियों, महिलाओं, बच्चों सैनिक आदि।

(डॉ. जितेन्द वत्स, डॉ. किरणबाला 2010)

रेडियो प्रसारण निस्संदेह एक बड़ी संचार क्रांति है। मानव के विषाल समूह को इस क्रांति ने नई सोच, नई दृष्टि और नई आषाओं से भर दिया। उसमें नए विचारों को जन्म दिया, उन्हें ज्ञान और मनोरंजन के नए और स्तरीय साधन उपलब्ध कराये। इसलिए इसकी लोकप्रियता के आगे अन्य माध्यम अपनी बहेतरी के बावजूद ग्रामांचल और विषेषकर पिछड़े इलाकों में अपनी पैठ नहीं बना सके। इसका कारण आर्थिक पिछड़ापन हो या बिजली जैसे संसाधनों का अभाव अथवा रिले केंद्रों की संख्या या क्षमता की कमी हो, लेकिन सुदूर क्षेत्रों में दृष्य–श्रव्य माध्याम की पहुंच सीमित रहने के कारण आकाषवाणी का वर्चस्व संप्रति कायम है।

शोध पध्दति

शोध अध्ययन कार्य करने के पीछे उसके कुछ उद्देष्य को पुरा करने के लिए शोध पध्दति अपनाई जाती है। शोध पध्दति विषय के अनुसार क्षेत्र को अध्यान में रखकर शोध पध्दति निर्धारित की जाती है।

अनुसूचित जनजाति समाज में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन हेतु निम्न पध्दति का उपयोग किया गया है:–

निर्देषन पध्दति :–इस अध्ययन के कार्य में तथ्यों का संकलन हेतु दैव निदैषन प्रणाली के अतर्गत लॉटरी विधि का प्रयोग किया गया है।

इस विधि हेतु दुर्गूकोंदल ब्लॉक के ग्रम पंचायतों के चार–चार ग्रामों का चयन किया गया। उत्तर दाताओं में महिला–पुरूष में से युवा और 40 से अधिक वर्ग के लोग भी शामील है। इसके साथ ही उत्तरदाताओं के साथ मिलकर गुणात्मक एंव गणात्मक दोनों प्रकार के आकड़े प्राप्त कर शोध निष्कर्ष प्राप्त किया है।

निर्देषन का आकार–

प्रोजेक्ट का कार्य हेतु कुल अकार 50 रखा गया है। जिसमें 30 पुरूष, 20 महिलाओं से तथ्यों एंव आकड़ो का संकलन किया गया है।

तथ्य संकलन के स्त्रोत :– तथ्य संकलन कार्य को पूरा करने हेतु अनेक विधियों निर्माण शोध कर्ताओं, विद्वानों के द्वारा किया गया है

कई विद्वानों, लेखकों ने ऑकड़ो के इन स्त्रोतों को दो भागों में विभाजित किया गया है। पी. वी यग के अनुसार–" समान्यतः स्त्रोतों को प्रलेखकीय और क्षेत्रीय स्त्रोतों में विभाजित किया गया है।" प्रलेखकीय स्त्रोतों के तहत प्रकाषित और अप्रकाषित प्रलेख प्रतिवदन, सॉख्यिकी, पांडुलिपि, पत्र, डायरियॉ आदि को जीवित व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है, समाजिक प्रारिस्थितियों के विषय में ज्ञान एंव उनमें हुए परिवर्तन की जानकारी हो।

प्राथमिक स्त्रोत–

प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत तथ्य के संकलन के हेतु निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है ।

अनुसूची – इस पध्दति के माध्यम से रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन किया गया है।

साक्षात्कार – तथ्य संकलन में शोध उद्देष्य को पुरा करने के लिए परिकल्पना के आधार पर साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया है।

द्वितीय स्त्रोत –

प्रस्तुत प्रोजेक्ट के लिए तथ्यों एंव आकड़ों का संकलन हेतु इंटरनेट, पुस्तक, विषयांतर्गत पूर्व शोध शासकीय विभागों के वेबसाइट संकलन इत्यादि से किया गया है।

तथ्यों का संकलन एंव वर्गीकरण –

शोध अध्ययन के द्वारा प्राप्त तथ्यों एंव आकड़ो का वर्गीकरण निम्न रूप से किया गया है–

तथ्यों का संकेतीकरण :– प्राप्त आकड़ो को निष्चित संकेतो में दर्षाया गया है। और इसी अधार पर आकड़ो का वर्गीकरण किया गया है।

मास्टर चार्ट का निर्माण :– प्राप्त आकड़ो का वर्गीकरण और संकेतीकरण के बाद आकड़ो का एक मास्टर चार्ट बनया गया है।

तथ्यों का सारणीयन एंव विष्लेषण :– प्रोजेक्ट के लिए प्राप्त आकड़ो का वर्गीकरण कर सारणी का निर्माण किया गया है।

तथ्यों एंव आकड़ो का विष्लेषण :–

इस अध्ययन कार्य के प्रोजेक्ट के उद्देष्यों की पुर्ति करने हेतु संकलित तथ्यों एंव आकड़ो का विष्लषण प्रस्तुत किया जा रहा है। अनुसूचित जनजाति क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन करना की पुर्ति करने वाले तथ्यों एंव आंकड़ो का विष्लेषण निम्नानुसार है–

तालिका कमांक 1 :– क्या आप रेडियो सुनते है?

1. हां 60:
2. नहीं 40:

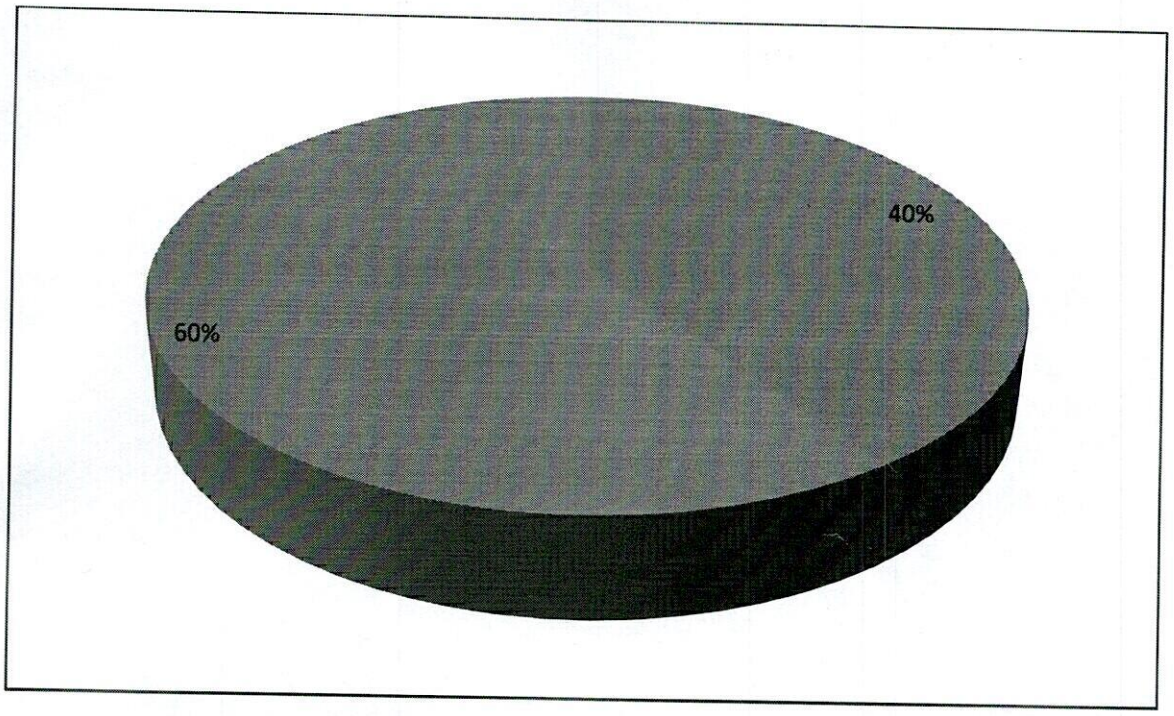

चार्ट कमांक 1

तालिका कमांक 1 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि क्या आप रेडियो सुनते है तो 40: उत्तरदाताओं ने हां कहा । 60: उत्तरदाताओं ने नहीं सुनते है।

तालिका कमांक 2 :– रेडियो सुनते है यदि हां तो कितने घंटे

1. 30 मीनट 38:
2. 1 घंटा 34:
3. 1घंटा से कम 24:
4. 2 घंटा 4:

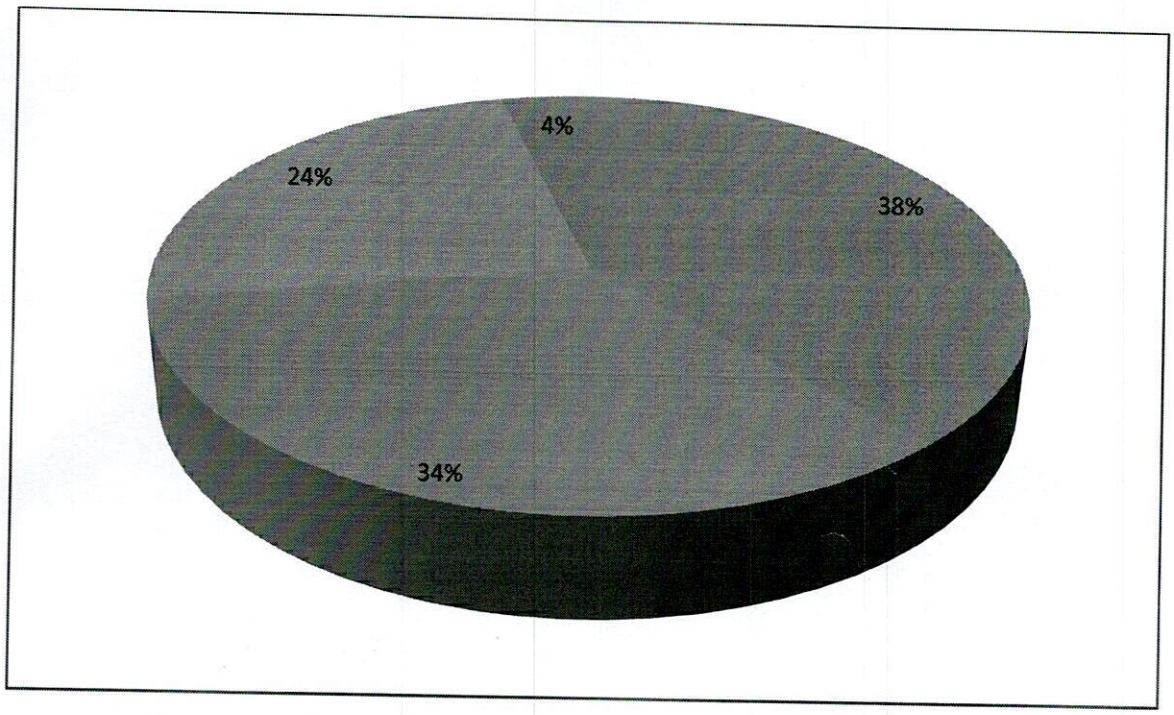

चार्ट कमांक 2

तालिका कमांक 2 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि आप रेडियो कितने घंटे सुनते है? तो 38: उत्तरदाताओं ने 30 मीनट बताया। 34: उत्तरदाताओं ने 1 घंटा रेडियो सुनते है जबकि 24: उत्तरदाता 1 घंटा से कम सुनते है और 4: उत्तरदाता 2 घंटा सुनना पसंद करते है।

तालिका कमांक 3 :– आप रेडियो कितने वर्ष से सुन रहे है?

1. 5वर्ष 36:
2. 10वर्ा 30:
3. 15वर्ष 32:
4. अन्य 2 :

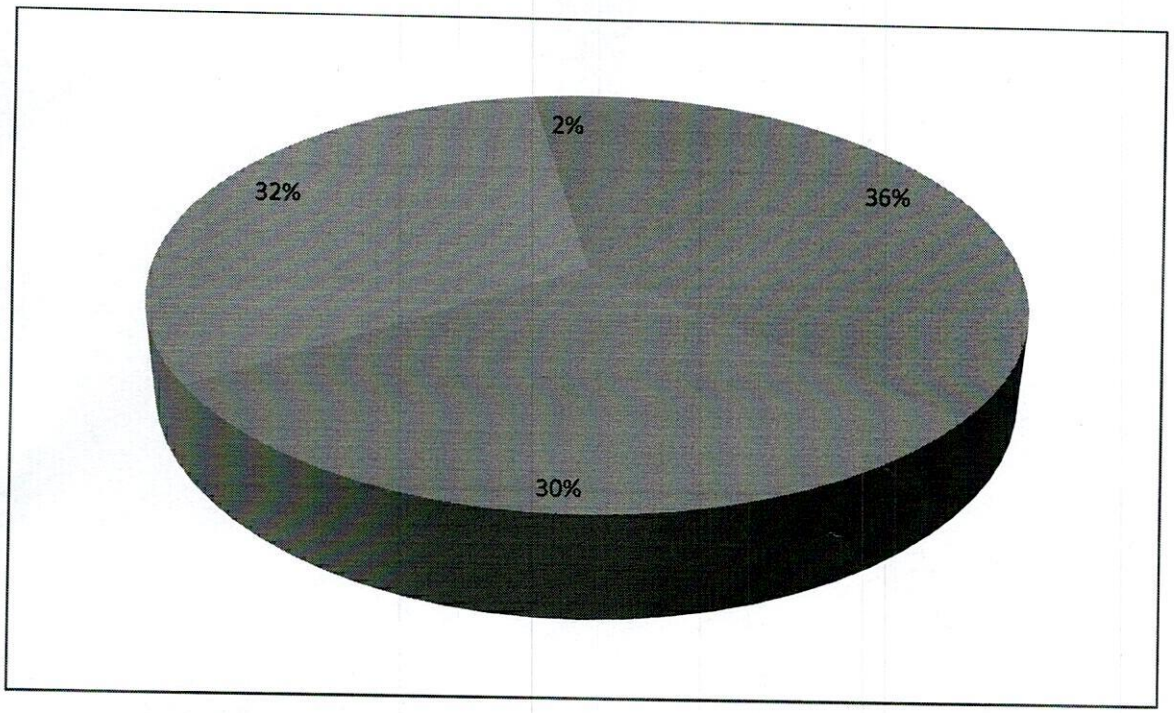

चार्ट क्रमांक 3

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो कितने वर्ष से सुन रहे है? तो 36: ने 5वर्ष जबकि 30: 10वर्ष और 32: ने 15 वर्ष कहा 2: उत्तरदाताओं ने अन्य बताया ।

तालिका क्रमांक 4 :– रेडियो कहां सुनते है?

1. अपने घर में 36:
2. पड़ोस में 16:
3. सामूहिक रूप से 0:
4. शहर जाने पर 0 :

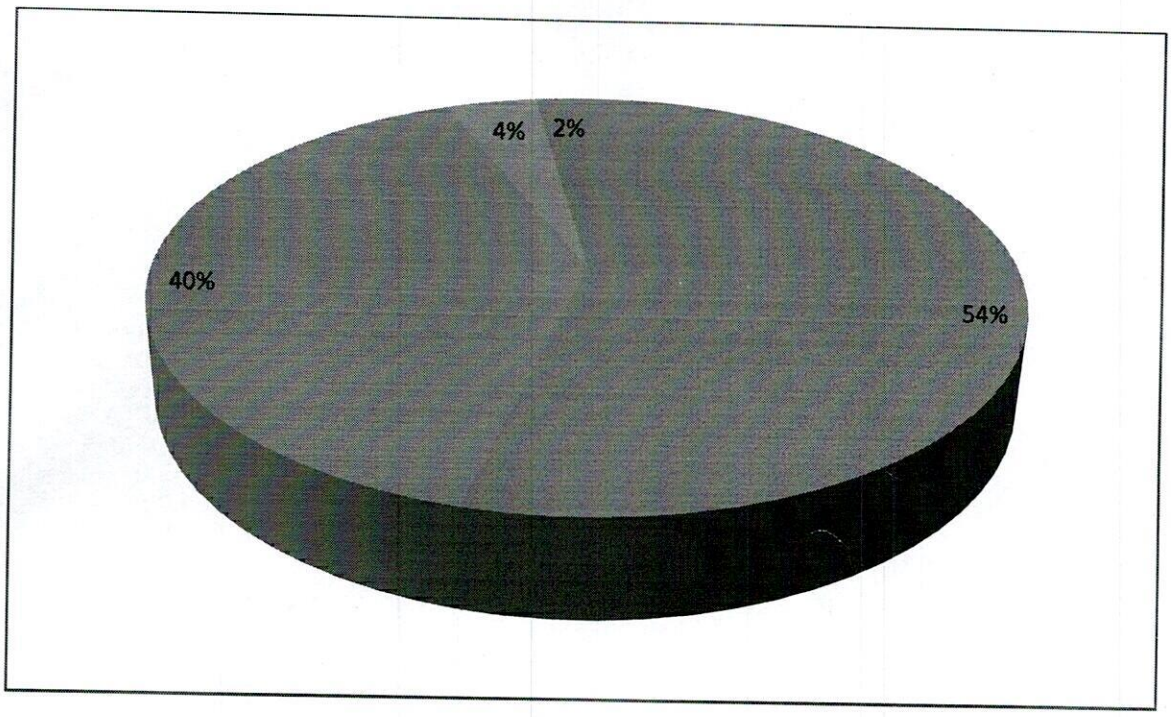

चार्ट क्रमांक 4

तालिका क्रमांक 4 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो कहां सुनते है? तो 36ः उत्तरदाताओं ने अपने घर में कहा जबकि 16ः उत्तरदाताओं ने पड़ोस में बताया और 0ः सामूहिक रूप से 0ः शहर जाने पर है।

तालिका क्रमांक 5 :– रेडियो कब सुनते है?

1. दिन में 56ः
2. रात में 14ः
3. दोपहार 30ः

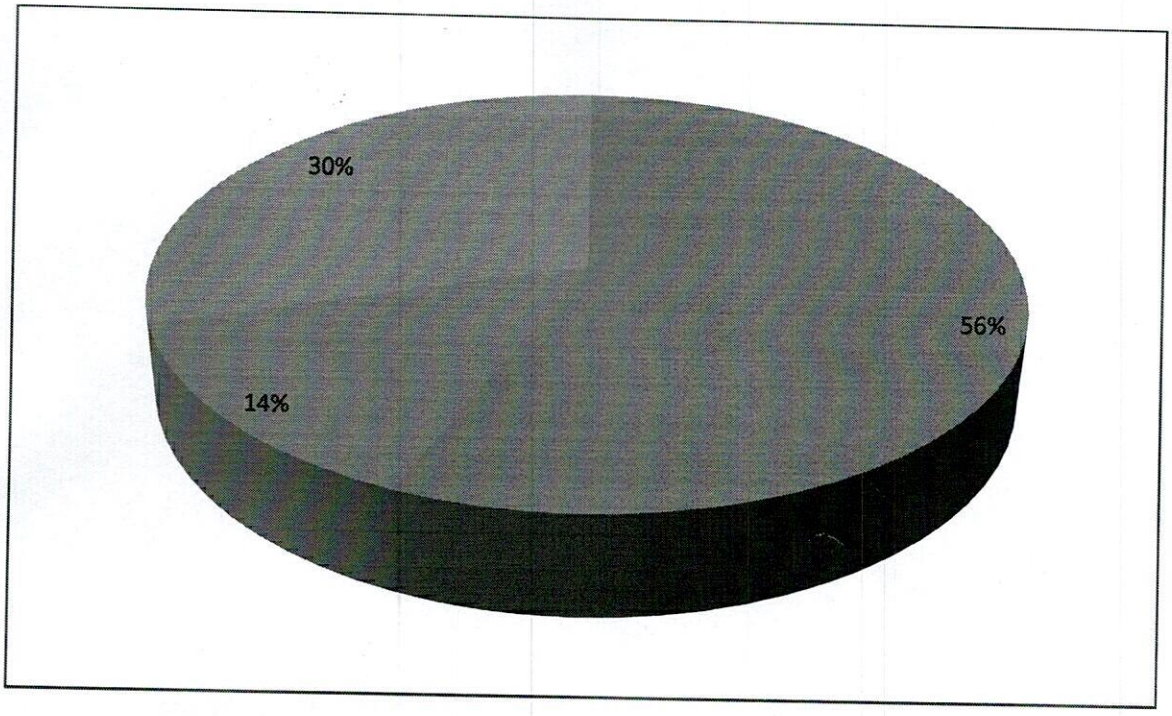

चार्ट क्रमांक 5

तालिका क्रमांक 5 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो कब सुनते है? तो 56: उत्तरदाताओं ने अपने घर में कहा जबकि 14: रात में और 30: उत्तरदाताओं ने दोपहर में बताया।

तालिका क्रमांक 6 :– रेडियो में आप कौन? सा चैनल सुनते है

1. विविध भारती 50:
2. ऑल इण्डिया रेडियो 40:
3. अन्य 10:

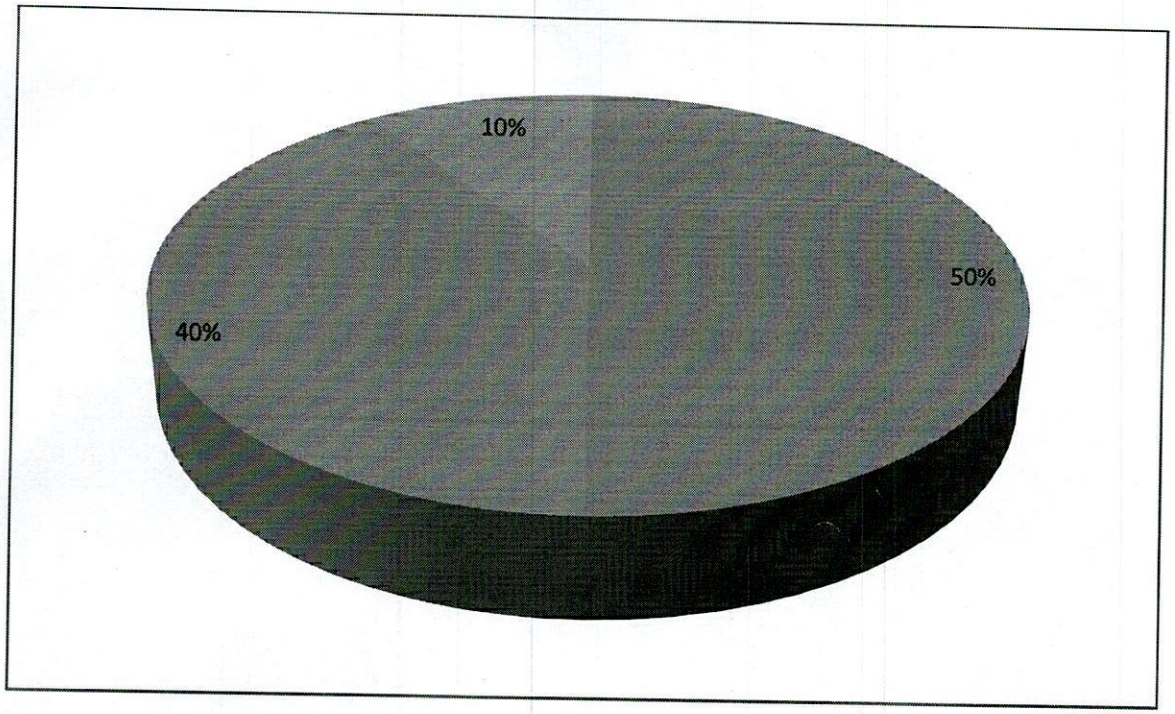

चार्ट क्रमांक 6

तालिका क्रमांक से 6 स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो में आप कौन – कौन सा चैनल सुनते है? तो 25: उत्तरदाताओं ने विविध भारती और 20: अपने उत्तरदाताओं ने ऑल इण्डिया रेडियो कहा और 5: उत्तरदाता अन्य में बताया।

तालिका क्रमांक 7 :– रेडियो में कौन–सा कार्यक्रम सुनना पसंद करते है?

1. समाचार 20 :
2. स्वास्थ 4:
3. नाटक 3:
4. गाने 18 :

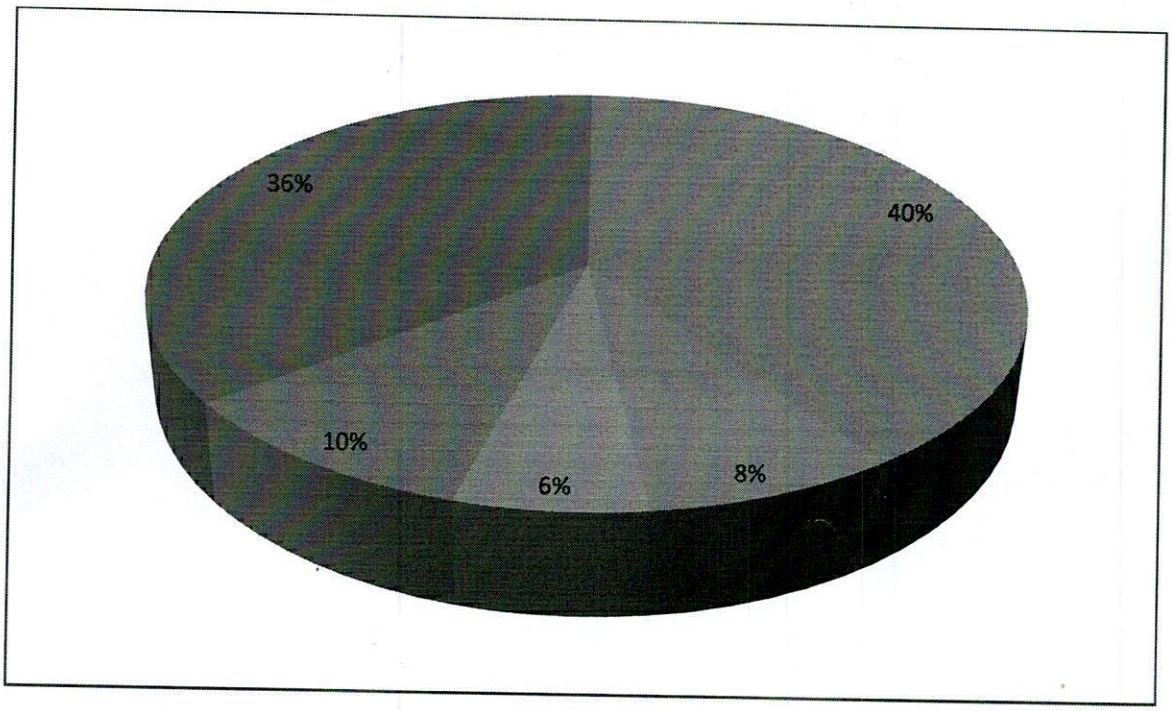

चार्ट कमांक 7

तालिका कमांक 7 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो में आप कौन – कौन कार्यकम अधिक पंसद है? तो 40: उत्तरदाताओं ने समाचार और 8: स्वास्थ 6: नाटक 8: षिक्षा 36: गाने उत्तरदाताओं ने बताया।

तालिका कमांक 8 :– रेडियो में कौन–सा कार्यकम अधिक पसंद है

1. सखी सहेली 20:
2. फोन इन कार्यकम 18:
3. युगवाणी 12:
4. अन्य 3:

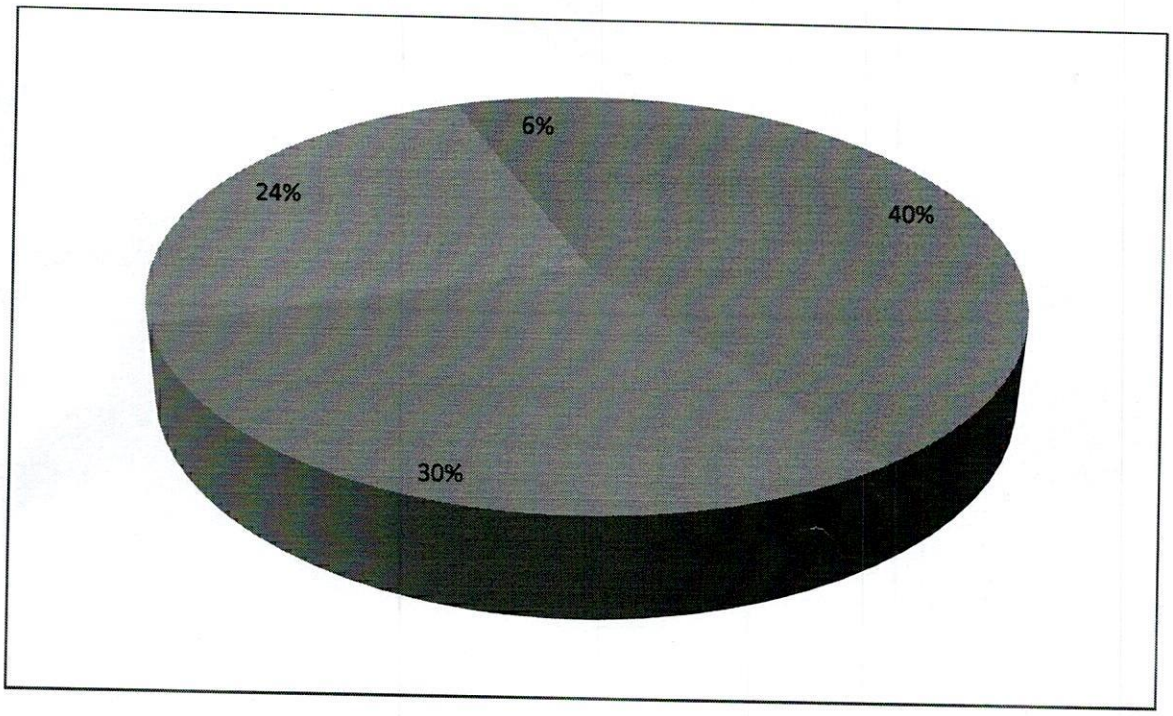

चार्ट कमांक 8

तालिका कमांक 8 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो में आप कौन–सा कार्यकम अधिक सुनते है? तो 40: उत्तरदाताओं सखी सहेली कहा जबकि 30: उत्तरदाताओं ने फोन इन कार्यकम बताया 24: उत्तरदाताओं ने युगवाणी 6: अन्य में बताया।

तालिका कमांक 9 :– रेड़ियो का उपयोग किस रूप में करते है?

1. जनकारी के लिए 22:
2. मनोरंजन के लिए 16:
3. अन्य 12:

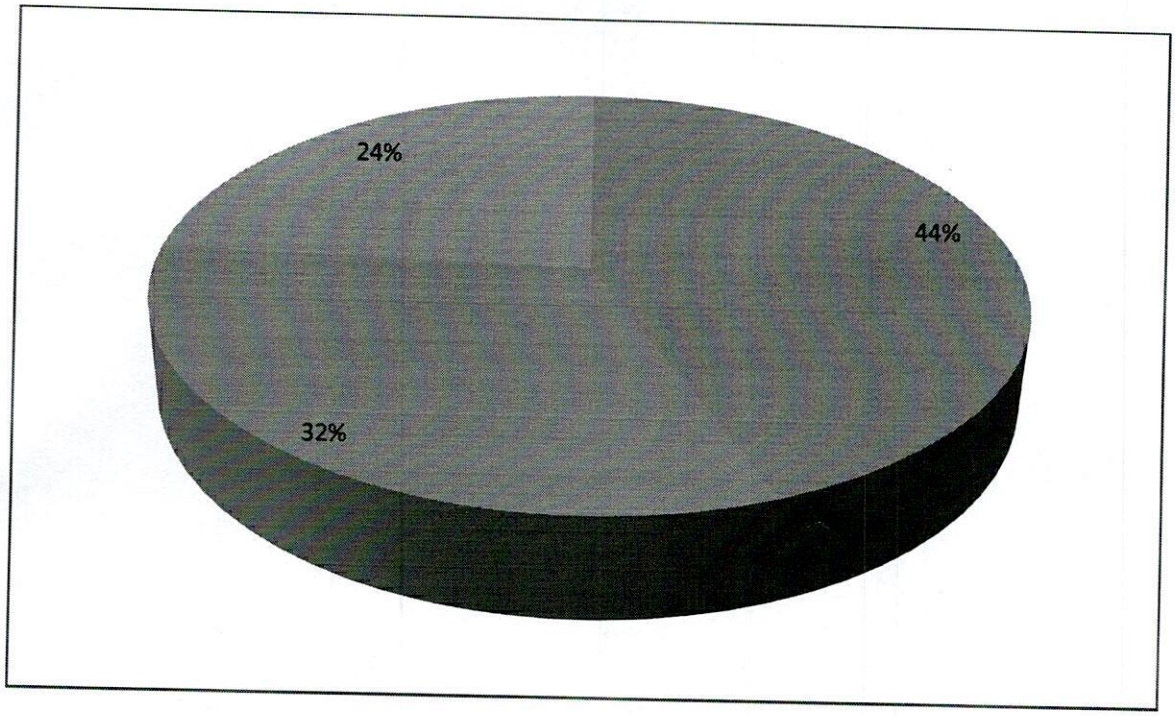

चार्ट क्रमांक 9

तालिका क्रमांक 9 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो का उपयोग आप किस रूप में करते है? 44: उत्तरदाताओं ने जानकारी के लिए कहा और 32 : उत्तरदाताओं ने मनोरंजन के लिए 24: उत्तरदाताओं ने अन्य बताया है।

तालिका क्रमांक 10:– रेडियो के माध्यम से सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलती है?

1. हां 66:
2. नहीं 34:

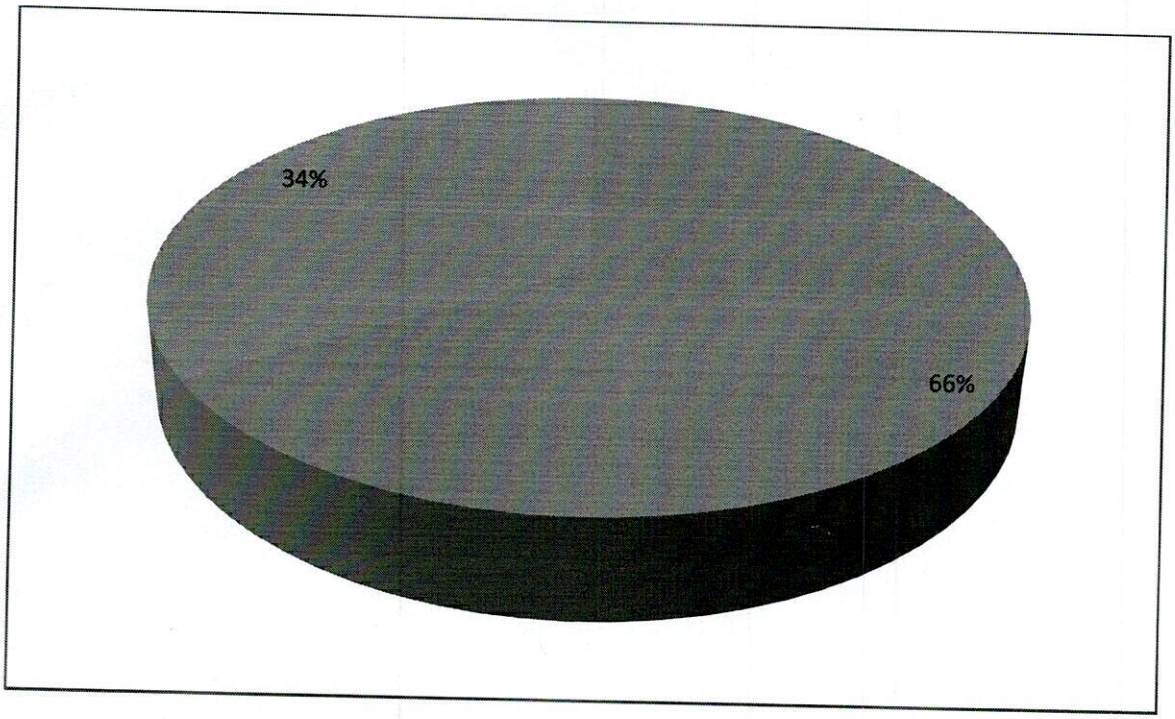

चार्ट कमांक 10

तालिका कमांक 10 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि रेडियो के माध्यम से सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलती है तो 66ः उत्तरदाताओं ने हां कहा और 34ः उत्तरदाताओं ने नहीं कहा।

अगर हां तो किस क्षेत्र से

1. कृषि 20ः
2. समाजकल्याण 34ः
3. षिक्षा 30ः
4. अन्य 16ः
5. तालिका कमांक :– 11 क्या रेडियो सुनकर प्रोसाहित्य होते है

1. हां 70ः
2. नहीं 30ः

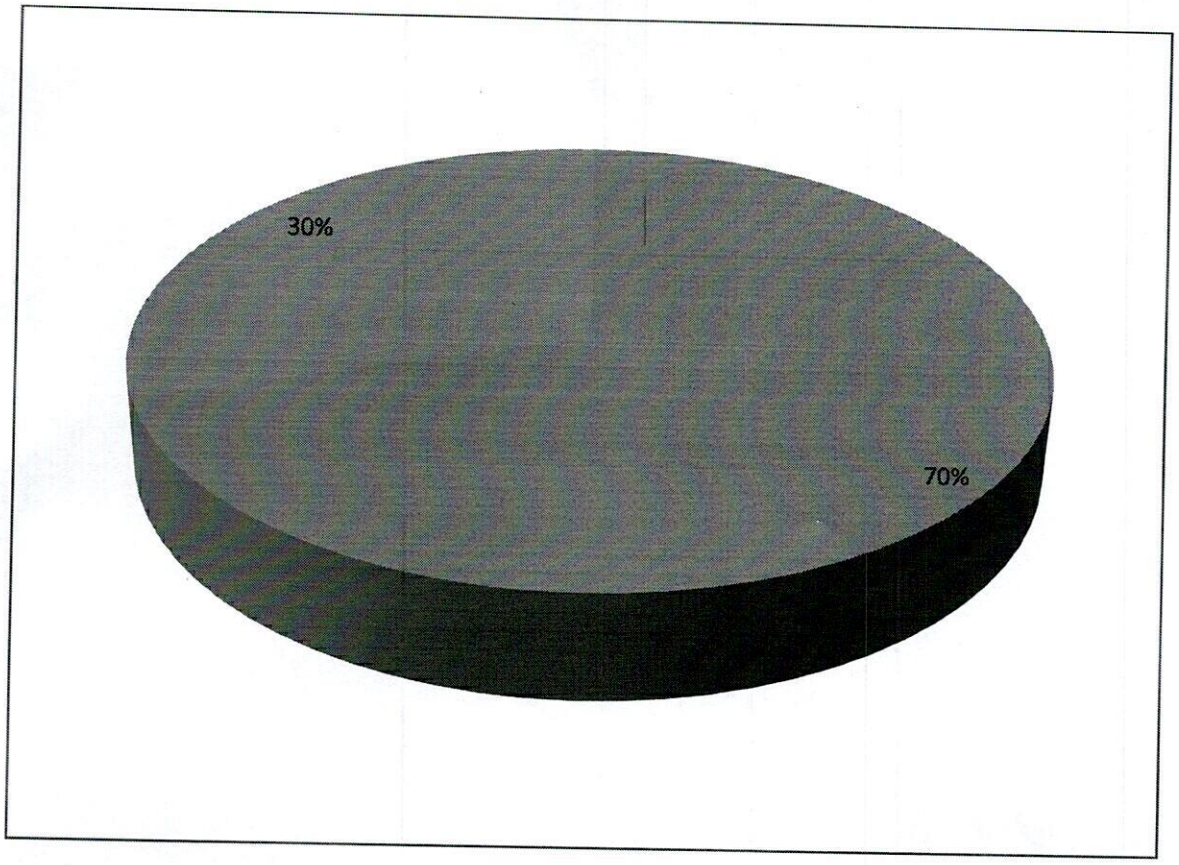

चार्ट क्रमांक 11

तालिका क्रमांक 11 से स्पष्ट है कि जब उत्तरदाताओं से यह प्रष्न किया गया कि क्या रेडियो सुनकर प्रोसाहित होते है? 70: उत्तरदाताओं ने हां कहा । 30: उत्तरदाताओं ने नहीं होते है।

अगर हां, तो किस तरह से

1. कम 32:
2. अधिक 20:
3. समान्य 48:

परिणाम

प्रस्तुत अध्याय में शोध से प्राप्त परिणाम को प्रस्तुत किया जा रहा है। जिनके माध्यम से शोध का उद्देष्यों की पूर्ति की जाएगी। दुर्गूकोंदल ब्लॉक के आदिवासी क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन जनजाति क्षेत्रों में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन उत्तर बस्तर के दुर्गूकोंदल ब्लॉक के संदर्भ में किया गया है। जिसमें 50 लागों का अध्ययन किया गया है और यह पता चला कि दुर्गूकोंदल ब्लॉक में ऐसे

गांव है जहां रेडियो की पहुंच बहुत सीमित क्षेत्र में उपलब्ध है। और कहीं – कहीं पर तो है ही नहीं, रेडियो का दाम बाजारों में 6 से 7 सौ रू. तक में बीक रहा है, जिसके कारण लोग रेडियो नही खरीद पा रहे है, अतः उनकी आर्थिक कमाई इतनी नही है, कि रेडियो खरीद सके।

आदिवासी क्षेत्र दुर्गूकोंदल ब्लॉक में टेलीविजन की पहुंच अब घर–घर में तेजी से हो रही है, डायरेक्ट टू होम सेवा की वजह से टीवी देखने वालो की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। और आज के वर्तमान परिवेष में मोबाइल फोन हर घर तथा हर एक व्यक्ति के पास उपलब्ध है, 88ः प्रतिषत व्यक्ति मोबाइल का उपयोग करता है। इस तरह से मोबाइल की उपस्थिति सबसे ज्यादा है। जबकि 60ः प्रतिषत लोगों के यहां रेडियो मौजूद है। व्यक्ति अपने मनोरंजन तथा सुचना एकत्रित करने के लिए अन्य साधन जैसे टीवी, मोबाइलो का इस्तेमाल आदिवासी क्षेत्र में भी होने लगा । जिसके वजह से रेडियो का उपयोग दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है।

निष्कर्ष :–

जनजाति क्षेत्र में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का आंकलन करने के लिए अनुसूचि के सहारे आंकड़े प्राप्त करके अध्ययन करने पर रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि कितनी है। अध्ययन में छत्तीसगढ़ के दुर्गूकोंदल ब्लॉक में के 10 गावों में से 50 लागों को शामिल किया गया है। जनजाति क्षेत्रों रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्यायन (उत्तर बस्तर दुर्गूकोंदल ब्लॉक के संदर्भ में) करने पर यहा निष्कर्ष निकला :–

1. रेडियो सुनते है प्रष्न किया गया तो 60ः लोगों का सकारात्मक तथा 40ः लोग ने नकारात्मक जवाब दिए।

   निष्कर्ष स्वरूप में यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में आज भी 60ः लागों रेडियो सुनने में रूचि रखते है। और इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के जानकारी प्राप्त करने के लिए करते है। जनजाति क्षेत्र में 50ः लोग विविध भारती तथा 40ः व्यक्ति ऑल इण्डिया रेडियो चैनल पर अपना मनपसंद कार्यक्रम 20ः लोग सखी सहेली और 18ः फोन अन कार्यक्रम जबकि 12ः लोग युगवाणी जैसे कार्यक्रम अधिक सुनना पसंद करते है।
2. जनजाति क्षेत्र के लोग रेडियो का उपयोग 20ः लोग समाचार, सूचना के लिए इस्तेमाल करते है, जबकि 16ः मनोरंजन और अन्य साधन के लिए उपयोग में लाते है।
3. जनजाति क्षेत्र में 56ः लोग दिन में करते है जबकि 14ः रात में और 30ः लोग दोपहर को उपयोग करते है।

4. आदिवासी क्षेत्र में रेडियो एक सुलभ साधन है। आसानी से कही भी ले जाके प्रयोग में लाया जा सकता है। आज जनजाति क्षेत्र में 36: लोग रेडियो घर पर सुनते है, जबकि 16: लोग पड़ोस में सुनकर आनंद लेते है। इससे यहा पता चलता है कि रेडियो कितना प्रभावी बात करने से पता चला कि कुछ लोग शहर जाने पर मोबाईल फोन एफ एम रेडियो सुनते है क्योंकि अब एफ एम रेडियो चैनल आने के बाद हर बड़े मोबाईल फोन में आसानी से प्राप्त हो जाती है। एफ एम चैनल केवल सीमित क्षेत्र तक इसका नेटर्वक उपलब्ध है। इसलिए कुछ लोग गांव से शहर जाने पर एफ एम रेडियो सुनते है।

5. ग्रामीण श्रोताओं के लिए विषेषकर ग्रामीण कार्यक्रम प्रसारित किये जाते तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाती है आदिवासी क्षेत्र में 34:लोग समाजकल्यण कार्यक्रम सुनते है, और 20: लोग कृषि से सम्बधी कार्यक्रम 30: षिक्षा कुछ लोग अन्य विषय में प्रसारित कार्यक्रमो में रूचि लेना।

6. रेडियो प्रसारित कार्यक्रमो की भाषा अलग – अलग तरह के होते है। हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में रेडियो पर कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। जनजाति क्षेत्र में 76: लोगो को हिन्दी भाषा में प्रसारित कार्यक्रमों की भाषा समझ में आता है जबकि 24: लागों को छत्तीसगढ़ी में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की भाषा आता है।

शोध में यह पता चला कि आदिवासी क्षेंत्र में रेडियो की पहुंच अब उच्च स्तर पर नहीं है पहले अपेक्षा रेडियो श्रोताओं की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। तथा उनकी अभिरूचि रेडियो के अपेक्षा टीवी, मोबाईल,में अधिक हो रहा है ग्रामीण क्षेत्र में टेलीविजन की घुसपेट की वजह से रेडियो श्रोताओं की संख्या में कमी आई जबकि पहले रेडियो ग्रामीण क्षेत्र में 88: लोगों के पास रेडियो की पहुंच थी जो घट कर 66: हो गया है।

सुझाव

जनजाति क्षेत्र दुर्गूकोंदल ब्लॉक में रेडियो श्रोताओं की अभिरूचि का अध्ययन का अंकलन करने के लिए अनुसूची के सहारे तथा प्राप्त आंकड़ो का अध्ययन से यहा पता चला कि दुर्गकोंदल ब्लॉक में और ऐसे विषयों पर अध्ययन किया जा सकता है जो निम्नलिखित है–

1. प्रचलित कार्यक्रम मन की बात और रमन के गोठ कार्यक्रम का दुर्गूकोंदल ब्लाक में रेडियो श्रोताओं पर पड़ने वाला प्रभाव का अंकलन करना।

2. आदिवासी क्षेत्रों के लिए रेडियो मुख्या धारा से जोड़ने का एक अहम माध्यम हो सकता है देष के तमाम राज्यों के सूचनाओं को ग्रामीणों तक पहुंचाने में रेडियो एक शषक्त माध्यम हो सकता है इसका अंकलन करना।

3. आदिवासी क्षेत्र में रेडियो की उपयोगिता के बारे में अंकलन किया जा सकता है।

4. आदिवासी क्षेत्र में रेडियो ग्रामीणों की धार्मिक आचरण पर पड़ने वाला प्रभाव व्यवहार या उनका विचारों का अंकलन करना।

5. आदिवासी क्षेत्रों में आज भी समुदायीक रूप से रेडियो सुना जा रहा है, इसका अंकलन करना।

आदिवासी क्षेत्र दुर्गूकोंदल ब्लाक में इन विषयो पर और शोध किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

:– तिवारी डॉ. अर्जुन, जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्करण।

:– राय डॉ. त्रिभुवन, जनसंचार माध्यम चुनौतियॉ और दायित्व, जयपुर प्रकाषन 2004।

:– मोहन डॉ. हरि, रेडियो और दूरदर्षन पत्रकारिता, नई दिल्ली दक्षषिला प्रकाषन 2008।

:– चन्द्र विकास, योजना, जनवरी प्रकाषन 2016।

:– शर्मा कौषल, रेडियो प्रसारण, नई दिल्ली प्रकाषन 2004।

:– त्रिपाठी संजय, श्रामति चंदन, उपहार छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ, प्रकाशन 2013।

:– वत्स डॉ.जितेन्द्र,डॉ किरणबाला, जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वाग, प्रकाषन गाजियबाद उत्तरप्रदेष 2010।

:– मीना राम लखन, जनसंचार सिध्दात और अनुप्रयोग, प्रकाषन कल्पना दिल्ली 110023।

:– श्रीवास्तव, डॉ. ए.आर.एन जनजाति और अनुसूचित जनजातियां, जनजातिय भारत,

ूण्बहेजंजमण्हवअण्पद

ीजजचेरूध्धीपण्उण्पापचमकपंण्वतहधूपाप